

अहकामे तस्वीर

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो



जानदार की तस्वीर हराम है और हुज़ूर के
रोजे व नालैन शरीफ की तस्वीर की
फ़जिलत का बायान

का हिन्दी तरजमा

अहकामे तस्वीर

JANNATI KAUN?

तयनीफ़ :-

अअ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
क्रादिरि फ़ाज़िले बरैलवी (अलैहिर्रहमा)

वफ़ेज़ :-

हुज़ूर मुफ़्तिअ अअ़ज़म हज़रत अल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क्रादिरि नूरी (अलैहिर्रहमा)

मस्अला (सवाल)

अज :- रियासत रीवा मुसिल मीलवी रहीम खान, 26 जिल हिज्जा 15 हिजरी

- [1] हुजूर — **عليه الصلاة والسلام** — की तस्वीर जियारत का सवाब हासिल करने की गर्ज से बनाना दुस्त व जाइज है या नहीं ? और (तस्वीर) बनाने वाला और खरीदार सवाब का हकदार होगा या नहीं ?
- [2] अगर कोई आहजरत (हुजूर) — **صلى الله تعالى عليه وسلم** — की तस्वीर व आप के बुराक की तस्वीर और हजरत जीविल — **عليه السلام** — की तस्वीर बना कर या बनवा कर सवाब हासिल करने की नियत से अपने पास रखे, और अक्सर मीलदे नबी की मजलिसों में इन तस्वीरों को इन्तिजाम के साथ नुमाइश के लिए जिक्रे मेराज शरीफ के वक़्त हाजरीने मजलीस के सामने पेश करे और याकीन इस बात का दिलाए के गोया हुजूर मेराज को तशरीफ से जाते हैं, और लोगों को सूने व चुमने के लिए कहे तो येह काम उस का शरअन जाइज हो सकता है ? और येह तमाम काम जो सवालात में लिखे गए शरीअत के मुताबिक होंगे या गैर शराई ?
- [3] हुजूर — **صلى الله تعالى عليه وسلم** — के रोजे मुकदसा की तस्वीर जियारत का सवाब हासिल करने की गर्ज से बनवा कर अपने पास रखना और येह ख्याल करना के जिस तरह अस्त (रोजे) की तअजीम व इज्जत से हम को सवाब हासिल होता है (वैसा ही) तअजीम (हुजूर के रोजे की) तस्वीर व नक़्सा से भी सवाब हासिल होता है ?
- [4] अगर येह ना जाइज व गैर शराई हो तो उन तस्वीरों को क्या करना चाहिये और नक्शा रोज़ा-ए-मुतहर (यानी हुजूर के रोजे की तस्वीर) "दलाइलुल ख़ैरात" में से निकाल देना बेहतर होगा या बदस्तूर बाकी व कायम रखना ।

अलजवाब

اللهم بك الحمد صلى على نبيك نبي الحمد وآله وصحبه
الخيار الحمد أسألك حسن الأدب وصدق الحب لجيبك الكريم

عليه وعلى آله افضل الصلوة والتسليم رب اِنِّي اَعُوْذُ بِكَ
مِنْ مَهْمَزَاتِ الشَّيْطَانِ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَخْضُرُوْنَ ۝

अल्लाह — عز وجل — पनाह दे इसीसे लईन (मरदूद) की मक्कारियों

से (उस की) सख्त मक्कारी यह है कि आदमी से नेकियों के धोके में गुनाह कराता है और शहेद के बहाने ज़ेहर पिलाता है — **العیاذ باللہ رب العالمین** — उस शख्स ने जो तीनों तस्वीर बनाई (यानी हुजूर **صلی اللہ علیہ وسلم** — बुराक व हज़रत जिब्रील **علیہ السلام** — की तस्वीर) और उन की ज़ियारत व झूने व बोसा लेने वाले व कराने वाले ने यह ज़वाल किया कि वोह हुजूर पुरनूर सैय्यदुल मुसालीन **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — की मुहब्बत का हक़ अदा कर रहा है और हुजूर को राजी करता है । हालाँकि हकीकत में वोह अपनी इन ग़लत हरकतों से हुजूर अक़दस सैय्यद अलम **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — की खुली ना फ़रमानी कर रहा है । उस पर पहले ना राज़ देने वाले हुजूर वाला **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — हुजूर फ़ख़रे अलम **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — ने जानदार की तस्वीर बनाना, बनवाना और उसे अपने पास तअज़ीम के साथ रखना सब हराम फ़रमाया । और उस पर सख्त सख्त अज़ाब की ख़बरें इरशाद फ़रमाई और उनको मिटाने का हुक्म दिया हदीस में इस बारे में बहुत ज्यादा बयान आया है ।

JANNATI KAUN?

हदीस ① :- सहीहैन (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़) व मुस्नदे इमामे अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्बास **رضی اللہ تعالیٰ عنہما** — से रिवायत है **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — फ़रमाते है

كُلُّ مَصْوُورٍ فِي النَّارِ يَجْعَلُ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ صُورَةٍ صَوَّرَهَا فَنَقَدَ فِي جَهَنَّمَ -

हर तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में है अल्लाह तआला हर तस्वीर के बदले जो उसने बनाई थी एक मखलूख़ पैदा करेगा के वोह जहन्नम में उसे अज़ाब करेगी ।

हदीस ② :- उन्हीं में यानी (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ व मुस्नदे इमामे अहमद) में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** — से रिवायत है **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — फ़रमाते है

— اِنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ الْمَصُوْرُوْنَ —

बेशक निहायत सख्त अज़ाब रोज़े क़ियामत तस्वीर बनाने वालों पर है ।

हदीस ③ :- उन्हीं में यानी (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ व मुस्नदे इमामे अहमद) में हज़रत अबू हुरैरह **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** — से रिवायत है **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** —

كَأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ ذَلِكَ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
 — فَصَبَّ يَخْلُقُ كَخَلْقِنِ فَلْيَخْلُقُوا ذَرَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوا حَبَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوا شَعِيرَةً —

अल्लाह — عز وجل — फ़रमाता है उससे बड़ कर ज़ालिम कौन जो घेरे बनाये हुए की तरह बनाये मला कोई दियूटी या गेहू या जव का दाना तो बना दें ।

हदीस (4) :- सहीहैन ने यानी (बुखारी शरीफ व मुस्लिम शरीफ) व सुनन नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** — से रिवायत है रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** — फ़रमाते है
 — إِنَّ الَّذِينَ يَصْعُقُونَ هَذِهِ الصُّوَرَ يُعَذِّبُونَ —

— **يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُقَالُ لَهُمْ أَخِيَّوْا مَا خَلَقْتُمْ** —

बेशक यह जो तस्वीर बनाते हैं क़ियामत के दिन अज़ाब किये जाएंगे उन से कहा जाएगा यह सूरतें जो तुम ने बनाई थी उन में जान डालो ।

हदीस (5) :- मुस्नदे अहमद व सहीहैन व सुनन नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** — से रिवायत है रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** — फ़रमाते है
 — **مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فَإِنَّ اللَّهَ مُعَذِّبُهَا** —

— **حَتَّى يَنْفَخَ فِيهَا الرُّوحَ وَلَيْسَ يُنَافِخُ** —

जो कोई तस्वीर बनाये तो बेशक अल्लाह तआला उसे अज़ाब करेगा यहाँ तक के (उससे कहा जाएगा) उस में रूह फूँके और वोह न फूँक सकेगा ।

हदीस (6) :- मुस्नदे अहमद व नामअे तिर्मिज़ी में हज़रत अबू हुरैरह — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** — से रिवायत है रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** — फ़रमाते है
 — **يَخْرُجُ عَنِّي مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَهُ عَيْنَانِ يَبْصُرُ بِهِمَا وَأُذُنَانِ يَسْمَعَانِ وَلِسَانٌ يَنْطِقُ يَقُولُ إِنِّي كُذِّبْتُ بِثَلَاثَةٍ بِهِنَّ جَعَلَ** —

— **مَعَ اللَّهِ الْغَاخُ وَبِكُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ وَبِالْهُصُورِ مِثْنُ** —

क़ियामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिस की दो आँखें होगी

देखने वाली, और दो कान सुनने वाले और एक ज़बान बात करती, वोह कहेगी मैं तीन फिरकों पर मुकर्रर की गई हूँ जो अल्लाह का शरीक बताए और हर ज़ालिम, हटथम और तस्वीर बनाने वाले पर ।

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा येह हदीस हसन सही गरीब है ।

हदीस ⑦ :- इमाम अहमद मुस्नद में और तबरानी मुअजमे कबीर और अबू नईम हुल्यतुल औलिया में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله تعالى عنه से रिवायत करते हैं, رسول الله صلى الله عليه وسلم फ़रमाते हैं.....
 — ان اشدّ اهل النار عذاباً يوم القيامة من قتل نبيا وقتله
 نبي او امام جائد وهو لآء المصوّرون ولفظ احمد اشدّ الناس
 عذاباً يوم القيامة رجل قتل نبيا وقتله نبي او رجلك
 يفتل الناس بغير علم او مصوّر يصوّر التماثيل -

बेशक रोज़े क्रियामत सब दोज़ाखियों में ज़्यादा सख़्त अज़ाब उस पर है जिस ने किसी नबी को शहीद किया या किसी नबी ने जिहाद में उसे क़त्ल फ़रमाया या ज़ालिम बादशाह या जो शख्स बग़ैर इल्म हासिल किये लोगों को बहकाने लगे, और तस्वीर बनाने वालों पर । JANNATI KAUN?

हदीस ⑧ :- बयहकी "शुएबुल ईमान" में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنه से रिवायत करते हैं رسول الله صلى الله عليه وسلم फ़रमाते हैं.....
 — ان اشدّ الناس عذاباً يوم القيامة من قتل نبيا او
 قتله نبي او قتل احد والديه والمصوّرون وعالم
 لم ينتفع بعلمه -

बेशक रोज़े क्रियामत सब से ज़्यादा सख़्त अज़ाब में वोह है जो किसी नबी को शहीद करे या कोई नबी उसे जिहाद में क़त्ल फ़रमाए या जो अपने में बाप को क़त्ल करे और तस्वीर बनाने वाले पर और वोह ज़ालिम जो इल्म पढ़ कर गुमराह हो ।

हदीस ⑨ :- इमाम मालिक व इमाम अहमद व इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व नसाई व इब्ने माजा हज़रत उम्मुल मोमेनीन आएशा सिदीका رضي الله تعالى عنها से रिवायत करते हैं.....

— قدّم رسول الله صلى الله عليه وسلم من سفر وقت
 سترت سموة بقوام فيه تماثيل فلما رآه رسول الله

سَقَرْتُ سَعْوَةً لِي بِقَوْمٍ فِيهِ تَمَثَّلُ كُلُّ نَارٍ أَلَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُلَوَّنٌ وَجْهُهُ وَقَالَ يَا عَائِشَةُ أَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا
عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ الَّذِينَ يَصْأَهُونَ بِخَلْقِ اللَّهِ وَفِي سَبْوَائِهِ
لِلشَّيْخَيْنِ قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ امْكُورَاهِيَّةً
فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَوْبُ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ مَاذَا أَذْنَبْتُ فَقَالَ
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذِّبُونَ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَيُقَالُ لَهُمْ أَتَمَّا خَلَقْتُمْ وَقَالَ إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِي
فِيهِ الصُّوَرُ لَا تَدْخُلُهُ الْمَلَائِكَةُ وَفِي أُخْرَى نَهْمًا تَسْأَلُ السَّيْرُ
فَهَيْتَكَ وَقَالَ مِنْ أَشَدِّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ الَّذِينَ

यानी रसूलुल्लाह — **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** एक सफ़र पर तशरीफ़
फ़रमा हुए थे मैं ने एक दरवाज़े पर तस्वीर वाला पर्दा लटकाया हुआ था, जब हुजुरे
अक़दस — **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — वापस तशरीफ़ लाए उस पर्दे को देख कर
आप के चेहरा अनवर का रंग बदल गया आप अन्दर तशरीफ़ न लाए उम्मुल
मोमेनीन फ़रमाती हैं मैं ने अर्ज की या रसूलुल्लाह — **صلی اللہ علیہ وسلم** —
मैं अल्लाह की तरफ़ और अल्लाह के रसूल की तरफ़ तौबा करती हूँ मुझ से क्या
ख़ता हुई हुजुरे अक़दस — **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** — ने वोह पर्दा उतार कर
फेंक दिया और फ़रमाया अए आपशा अल्लाह तआला के यहाँ सख़्त तर अज़ाब रोज़े
क्रियामत उन तस्वीर बनाने वालों पर हैं जो खुदा के बनाए हुए की नक़ल करते हैं
उन पर रोज़े क्रियामत अज़ाब होगा उन से कहा जाएगा येह जो तुम ने बनाया है
उस में जान डालो, जिस घर में तस्वीर होती है उस में रहमत के फ़रिशते नहीं आते।

हदीस (10) :- अबू दाऊद तिर्मिज़ी व नसाई व इब्ने हिब्वान हज़रत अबू हुरैरह
... फ़रमाते हैं — **صلی اللہ علیہ وسلم** रसूलुल्लाह से रिवायत करते हैं **رضی اللہ تعالیٰ عنہ**

أَتَانِي جَبْرِئِيلُ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ فَقَالَ لِي يَا أَيُّهَا النَّاسُ يَنْقُطُ
فَقَصِيرُ كَيْفَاةِ الشَّجْوَةِ وَأَمَّا بِالسَّيْرِ فَيُجْعَلُ وَسَادَتَيْنِ مَنبُودَتَيْنِ
تُطْفَأَانِ

(मुख़्तसर हदीस येह है) मेरे पास ज़िबीले अमीन — **عليه الصّلاة والسلام**

ने हाजिर हो कर अर्ज कि हुजूर हुक्म दे कि मुर्तियों के सर काट दिये जाएं के पेढ़ की तरह रह जाए और तस्वीर वाले पर्दों के लिए हुक्म फ़रमाएँ के काट कर दो चादरें बना ली जाएँ कि ज़मान पर डाल कर पावें हो गेन्दी जाएँ ।

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा के येह हदीस हसन सही है ।

हदीस (11) से (14) तक :- सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और सही मुस्लिम में हज़रत उम्मुल मोमेनीन आएशा सिद्दीका — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** —

आर उसी बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत उम्मुल मोमेनीन मैमूना और मुस्नदे इमाम अहमद में सही सुयूती के साथ हज़रत असामा बिन ज़ेद — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** —

से रिवायत है रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते है, जिब्रिले अर्मान **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ** अर्मान ने अर्ज की.....

..... **وَالْقَسْبُ** ने हुजूर अक़दस **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज की.....

— **إِنَّا لَا مَدْخَلَ بَيْتَانِيهِ كَلْبٌ وَصُورَةٌ** —

हम रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जहाँ कुत्ता या तस्वीर हो ।

हदीस (15) :- अहमद व नसाई व इब्ने माजा व इब्ने ख़जीमा बिन मन्सूर हज़रत

अमीरुल मोमेनीन अली मुरतज़ा — **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ** — से रिवायत है रसूलुल्लाह

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया (आर आप से) जिब्रिल अर्मान ने अर्ज की

إِنَّمَا ثَلَاثُ شَيْءٍ يَلْعَلُكَ مَا دَامَ فِيهَا وَاحِدٌ مِنْهَا كَلْبٌ

أَوْ جَنَابَةٌ أَوْ صُورَةٌ رُوحٌ

तीन चीज़ें हैं कि जब तक उन में से एक भी घर में होगी कोई फ़रिश्ता-ए-रहमत व बरकत का उस घर में दाखिल न होगा १-कुत्ता २-ना पाक शख्स ३-या जानदार की तस्वीर ।

हदीस (16) - (17) :- मुस्नदे अहमद व सही बुख़ारी व सही मुस्लिम व आमेए

तिर्मिज़ी व सुनन नसाई व इब्ने माजा में हज़रत अबू तलहा और सुनन अबी दाऊद

व नसाई व सही इब्ने हिब्वान में हज़रत अमीरुल मोमेनीन मौला अली **رَضِيَ اللَّهُ**

تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते है.....

— **لَا تَدْخُلُ الْمَسْكَةُ بَيْتَانِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ** —

रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो

हदीस (18) :- नसाई व इब्ने माजा व शाशी व अबू यज़ला और अबू नईम

हुलिया में और ज़िया सही मुख्तारह में अमीरुल मोमेनीन अली **क़रम الله تعالی وجهه** से रिवायत करते हैं.....

صَنَعْتُ لَهَا مَا قَدَعَوْتُ رَسُولُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَجَاءً
فَرَأَى تَصَاوِيرَ فَرَجَعَ إِذَا دَا لَارِبَعَةٍ (الْأَخْيَرُونَ) فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ
مَا رَجَعْتَ بَابِي وَإِنِّي قَالَتْ إِنَّ فِي الْبَيْتِ سِتْرًا فِيهِ تَصَاوِيرُ وَارْت
الْمَلِكَةُ لَا تَدْخُلُ بَيْنَافِيهِ تَصَاوِيرُ

मैं ने हुजूर पुरनूर **صلوات اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** की दावत की हुजूर तशरीफ़ फ़रमा हुए, पर्दे पर कुछ तस्वीरें बनी देखी, वापस तशरीफ़ ले गए, मैं ने अज़र्ज की या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप हुजूर पर कुर्बान आप किस सबब से वापस हुए, फ़रमाया घर में एक पर्दे पर तस्वीरें थी और रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस में तस्वीरें हों ।

हदीस (19) :- सही बुखारी व सुनन अबी दाऊद में हज़रत उम्मुल मोमेनीन
आएशा—رضی اللہ تعالیٰ عنہا से रिवायत है.....

إِنَّ الْبَيْتَ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ يَتَوَكَّلُ
فِي بَيْتِهِ شَيْئًا مِنْهُ تَصَالِيْبُ إِلَّا نَقَضَهُ

नबी - **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** - जिस चीज़ में तस्वीर देख लेते उसे बे टोड़े न छोड़ते ।

हदीस (20):- मुस्लिम व अबू दाऊद व तिर्मिजी हिब्बान बिन हसीन से रिवायत करते हैं

قَالَ لِي عَلَىٰ رِضَىٰ اللَّهِ
تَعَالَىٰ عَنْهُ إِلَّا ابْتَغَيْتُكَ عَلَىٰ مَا بَعَثَنِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ لَمْ تَدْخُ صُورَةً إِلَّا طَمَسْتُهَا وَلَا قَبْرًا مَشَرَفًا
إِلَّا سَوَّيْتُهُ

मुझ से अभीरुल मोमेनीन मौला अली-**क़रम الله وجهه**- ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें उस क़ादिर पर न भेजूँ जिस पर मुझे रसूलुल्लाह **صلی اللہ علیہ وسلم** ने साफ़ फ़रमा कर के भेजा कि जो तस्वीर देखू उसे मिटा दूँ और जो क़ब्र हद्दे शराज़ (यानी एक बालिष्ठा)

से ज्यादा उंची पाऊँ उसे हद्दे शरअ (यानी एक बालिश्त) के बराबर कर दें कब्र की बुलन्दी में हद्दे शरअ एक बालिश्त है ।

وَرَوَاهُ أَبُو يَعْلَى وَأَبْنُ مَرْزُوقٍ فَلَمْ يَسْمُيَا حَيَّانَ إِنَّمَا قَالَ عَنْ عَلِيٍّ
أَنَّهُ دَعَا صَاحِبَ شَرْطَتِهِ فَقَالَ لَهُ قَدْ كَرَّاهِمُخْنَاهُ

हदीस (21) :- इमाम अहमद सही सुकूतो के साथ जमास्त मोमेनीन जन्म से रिवायत करते हैं **رَسُولُ اللَّهِ ﷺ** एक जनाजे में ये हुजूर ने इरशाद फ़रमाया

إِيَّاكُمْ يُطْلَقُ

إِلَى الْمَدِينَةِ فَلَا يَدْعُ بِهَا وَثَنًا إِلَّا كَسْرَةً وَلَا قَبْرًا إِلَّا مَوَاطِئًا
وَلَا مَوْرَةً إِلَّا طَهْرًا

तुम में कौन ऐसा है मदीने जा कर हर बुत को टोड़ दे और हर कब्र बराबर कर दे और हर तस्वीर मिटा दे । एक साहब ने अर्ज की के मैं या रसूलल्लाह **ﷺ** फ़रमाया तो जाओ । वोह जा कर वापस आए और अर्ज की या **ﷺ** मैं ने सब बुत तोड़ दिये और सब कब्रें बराबर कर दी और सब तस्वीरें मिटा दी । रसूलल्लाह **ﷺ** ने फ़रमाया — **مَنْ عَادَ إِلَى صَنْعَةٍ شَيْءٍ مِنْ هَذَا فَقَدْ كَفَرَ بِمَا أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ** — अब जो येह सब चीजें बनाएगा वोह कुफ़र व इन्कार करेगा उस चीज़ के साथ जो मुहम्मद **ﷺ** पर नाज़िल हुई **وَالْعِيَاذُ بِاللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** ।

मुसलमान ईमान की नज़र से देखे कि सही व साफ़ हदीसों में इस पर कैसी सख्त सख्त वइद (अज़ाब की ख़बरें) फ़रमाई गई और येह तमाम हदीसे पूरी आप हैं जिन में हरगिज़ किसी तस्वीर किसी तरीके की खुसूसियात नहीं तो दीन की क़ाबिले तअज़ीम तस्वीरों (यानी किसी बुजुर्ग वगैरा की तस्वीर को) को खुदा व रसूल के हुक्मों से अलग ख़्याल करना बिल्कुल झूट व बचकाना ख़्याल है, बल्कि शरअ मुतहर (शरीअते इस्लामी) में ज्यादा शिद्दत का अज़ाब तस्वीरों की तअज़ीम पर ही है और खूब बुत परस्ती की शुरूआत इन्हीं क़ाबिले तअज़ीम तस्वीरों से हुई । कुरआने अजीम में जो पॉंच बुतों का जिक्र सूरह नूह **وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَام** में फ़रमाया..... उम्र, सवाक, यगुल, पाउक, नल, ये पॉंच बन्दगाने सालेहीन (निक बन्दे) थे कि लोगों

ने उन के इन्तेकाल के बाद इब्नीस भरद्दूज के बहकावे में आ कर उन की तस्वीरें बना कर उन की मजलिसों में कायम की फिर बाद की आने वाली नस्लों ने उन्हें खुदा समझ लिया ।

सही बुझाई अर्थ मे हनन अन्तुन्नह विन् भन्नास وَاللّٰهُ से रियायत हे

[illegible]

इस के बावजूद अगर हमारे और दूसरे जित से मुक्त न हों तो यह खुली तहलका हदोंसे से हुआ करने तजवीज तस्वीरों का जज़िया लीजिये ।

हदीस (22) - गरी इब्नाः शरीफ ने हज्जत अब्दुल्लाह बिन अब्बास
से रिवायत है.....

إِنَّهُ قَالَ دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَيْتَ فَوَجَدَ فِيهِ
صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ وَصُورَةَ مُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلَامَةُ وَالسَّلَامُ
فَقَالَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَا لَهُمْ فَقَدْ سَمِعُوا أَنَّ الْمَلِيكَ
لَا تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةُ الْحَدِيثِ هَذَا لَفْظُهُ فِي الْحَجِّ وَفِي الْأَنْبِيَاءِ
إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ لِيَمَارَأَى الصُّوْرَ فِي الْبَيْتِ ثُمَّ يَدْخُلُ
حَتَّى أَمْرُهَا تُخْمِتَ الْحَدِيثَ وَفِي الْمَغَارَى فَأَخْرَجَ صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ
وَأَسْفَعِلَ عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ الْحَدِيثَ هَذِهِ كُلُّهَا بِأَيَاتِ
الْبُخَارِيِّ وَذَكَرَ مِنْ هَشَامٍ فِي سِيَرَتِهِ قَالَ وَحَدَّثَنِي بَعْضُ
أَقْبَلِ الْعُلَمَاءِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
دَخَلَ الْبَيْتَ يَوْمَ الْفَيْحِ فَسَأَلَ فِيهِ صُورَةَ الْمَلِيكَ وَغَيْرَهُمْ
فَسَأَلَ فِي إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ مَصُورَةً فَذَكَرَ الْحَدِيثَ

الى ان ذرته بيد الصوري كذا فطهست

फतहे **صلی اللہ علیہ وسلم** کا खुलासा یہ ہے कि رسول اللہ ﷺ काब-ए-मुअज्जमा के अन्दर तशरीफ फरमा हुए उस में हजरत इब्राहीम व हजरत इस्माईल व हजरत मरयम व फरिश्तों **علیہم الصلوة والسلام** की तस्वीरों पर नज़र पड़ी हुजुरे अक़दस **صلی اللہ علیہ وسلم** वैसे ही पलट आए और फरमाया खबरदार हो बेशक उन बनाने वालों के कान तक भी यह बात पहुँची हुई थी के जिस घर में कोई तस्वीर हो उस में रहमत के फरिश्ते नहीं जाते । फिर हुक्म फरमाया के जिल्ली तस्वीरें नक्श वाली (यानी कच्चे रंग वाली) सब मिटा दी जाए और जिल्ली मुजस्सम (यानी पक्के रंग से बनी हुई तस्वीरें) है सब बाहर निकाल दी जाए । इन्हीं (तस्वीरों) में हजरत सैय्यदना इब्राहीम खलीलुल्लाह व हजरत सैय्यदना इस्माईल जबीहुल्लाह **صلی اللہ تعالیٰ علیٰ انبیا الاکرام وعلیہما وبارک وسلم** की तस्वीरें भी बाहर लाई गई, जब तक काब-ए-मुअज्जमा सब तस्वीरों से पाक न हो गया हुजुर पुरनूर **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** ने अपने कदमे अकरम से उसे शर्फ न बख़्शा ।

हदीस (23) :- मुस्नदे इमाम अहमद में हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह **رضی اللہ عنہما** से रिवायत है.....

قَالَ كَانَ فِي الْكَعْبَةِ صُورٌ فَأَدْبَأَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ أَنْ يَمْحُوَهَا فَبَلَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
ثَوْبًا وَفُحَا هَابٍ فَدَخَلَهَا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا
فِيهَا شَيْءٌ وَفِي حَدِيثٍ عِنْدَ الْأَمَامِ الثَّوَالِقْدِيِّ وَكَانَ عُمَرُ قَدْ
مَرَّكَ صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ فَلَمَّا دَخَلَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
رَأَاهَا فَقَالَ يَا عُمَرُ أَلَمْ تَرَ أَنَّ لَاتُدْعَى فِيهَا صُورَةٌ
شَعَرًا أَوْ صُورَةً مَرِيئَةً فَقَالَ أَمْسَحُوا مَا فِيهَا مِنَ الصُّورِ قَالُوا
اللَّهُ قَوْمًا يَصَوِّرُونَ مَا لَا يَخْلُقُونَ

हदीस (24) - उमर बिन शीबह, हजरत असामा बिन जैद **رضی اللہ عنہما** से रिवायत करते हैं.....

إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ

تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ الْكَعْبَةَ فَأَمَرَنِي فَأَتَيْتُهُ بِمَاءٍ فِيهِ
 دُخَانٌ فَجَعَلَ يَسِيلُ الثَّوْبَ وَيَضْرِبُ بِهِ عَلَى الصُّوَرِ وَيَقُولُ قَالَ
 اللَّهُ قَوْمًا يَصَوِّرُونَ مَا لَا يَخْلُقُونَ

हदीस (25) :- अबू बकर बिन अबी शीबह, हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते हैं.....

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ تَجَرَّدُوا فِي الْأَثَرِ وَأَخَذُوا الدِّلَاعَ ابْجَرُوا عَلَى تَرْتُّومٍ يَفْسِلُونَ
 الْكَعْبَةَ ظَهْرَهَا وَبَطْنَهَا فَلَمْ يَدْعُوا شَرًّا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِلَّا مَحْوَةً
 وَغَسْلُوهَا

इन तमाम हदीसों का हासिल यह है कि काबे में जो तस्वीरें थी हुजूर
 अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने अमीरुल मोमेनीन उमर फ़ारूक़े आजम
رضی اللہ تعالیٰ عنہ को हुक्म फ़रमाया के उन्हें मिटा दो, उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہ
 और दीगर सहाबा-ए-किराम चादरें उतार उतार कर हुजुरे अक़दस के हुक्म को पूरा
 करने में लग गए। ज़मज़म शरीफ़ से डोल के डोल भर कर आते और काबे के
 अन्दर बाहर से धोया जाता कपड़े भिगो भिगो कर तस्वीरें मिटाई जाती यहाँ तक
 के वोह मुशरिकों के आसार सब धो कर मिटा दिये गए जब हुजुरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم
 ने खबर पाई के अब कोई निशान बाकी न रहा उस वक़्त आप अन्दर
 रौनक अफ़रोज हुए (यानी काबे के अन्दर तशरीफ़ लाए) इत्तेफ़ाक़ से कुछ तस्वीरें जैसे
 हजरत इब्राहीम खलीलुल्लाह عليه الصلاة والسلام की तस्वीर का निशान बाकी
 रह गया था फिर नज़र फ़रमाई तो हजरत मरयम की तस्वीर भी साफ़ न धुली थी
 हुजुर पुरनूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने अस्तामा बिन मेद رضی اللہ تعالیٰ عنہ से एक डोल
 पानी मँग कर ख़ूद आप ने कपड़ा गिला कर के उन तस्वीरों को मिटाया और इरशाद
 फ़रमाया "अल्लाह की मार इन तस्वीरों के बनाने वालों पर"।

फ़तहूल बारी शरहे सही बुख़ारी में है...

فِي حَدِيثٍ آسَامَةٌ أَنَّكَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ
 الْكَعْبَةَ فَهَوَّاهُ صَوْرًا مَدْعَا بِمَاءٍ فَجَعَلَ يَمْحُو مَا وَهُوَ مَحْمُولٌ
 عَلَى أَنَّهُ بَقِيَتْ بَقِيَّةٌ خَفِيَتْ عَلَى مَنْ عَامَا أَوَّلًا

हदीस (26) :- सहीहिन (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़) में उम्मुत मोमेनीन अफ़रा

सिद्दीका — **رضی اللہ تعالیٰ عنہا** — से रिवायत है.....

لَمَّا اشْتَكَى ابْنُ مَرْثَدٍ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرَ بَعْضُ نِسَائِهِ كَنِيْسَةً يُقَالُ لَهَا مَارِيَا وَكَانَتْ أُمَّ سَلَمَةَ وَأُمَّ حَنِيْبَةَ انْتَأَرَضَ الْحَيَّةُ فَذَكَرَ قَامِنْ حُسْنِهَا وَنَصَادِثِهَا فَوَفَّعَ رَأْسَهُ فَقَالَ أَوْلَيْكَ إِذَا مَاتَ فِيْهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ بَنُوْا عَلَى قَبْرِهِ شَهِدًا ثُمَّ صَوِّرُوْا فِيْهِ بِلَکَ الصُّوْرَ أَوْلَيْكَ شَرَّ مَا خَلَقَ اللَّهُ

हुजुरे अक़दस **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** के मर्ज़ (बीमारी) में आप की कुछ बीबीयों ने एक गिरजा घर का जिक्र किया जिस का नाम "मारिया" था और उम्मुल मोमेनीन उम्मे सलमा व उम्मुल मोमेनीन उम्मे हबीबा मुल्के हबशा में हो आई थी और उन दोनों बीबीयों ने मारिया की खूबसूरती और उस की तस्वीरों का जिक्र किया, हुजुरे अक़दस **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** ने सर उठा कर फरमाया....येह लोग जब उन में कोई नैक बन्दा, नबी, या धली इन्तिक़ाल करता है तो उस की कब्र पर मस्जिद बना कर उस में तबर्क़ के तौर पर उस की तस्वीर लगाते हैं येह लोग बद तरीन लोग हैं।

हदीस (27) :- इमाम बुखारी "किताबुस्सलाम जामाए सही" में और अब्दुर रज़्जाक व अबू बकर बिन शीबह अपने अपने मुसन्निफ़ में और बयहकी सुनन में असलम मिला अमीरुल मोमेनीन उमर — **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** — से रिवायत करते हैं....

जब अमीरुल मोमेनीन मुल्के शाम को तशरीफ़ ले गए एक जमीनदार ने आ कर अर्ज की मैं ने हुजूर के लिए खाना तैयार कराया है मैं चाहता हूँ के हुजूर मेरे घर तशरीफ़ लाए के मेरे दोस्तों में मेरी इज्ज़त बड़े, अमीरुल मोमेनीन ने फ़रमाया

إِنَّمَا نَدْخُلُ الْكُنَائِسَ الَّتِي فِيْهَا مَذْبُوحُ الصُّوْرِ

हम उन घरों पर नहीं जाते जिन में तस्वीरें होती हैं।

हुक़्म वाज़िह हैं और मस्अला ताफ़ और वोह हरकतें जो सवाल में पृष्ठी गई यकीनन हराम और उन में सवाब का अक़ीदा खुली गुमराही है। उस शख्स पर फ़र्ज़ है के इस हरकत से बाज़ आए और हराम में सवाब की उम्मीद से खीफ़ करे, न ख़ूद गुमराह हो न जाहिल मुसलमानों को गुमराह बनाए, उन तस्वीरों को ना आबाद जंगल में रास्ते से दूर लोगों की नज़र से बचा कर इस तरह दफ़न कर दे कि जाहिलों को उन की हरगिज़ ख़बर न हो या किसी ऐसे दरया में के कभी सुख़्ता न हो, जाहिलों की निगाह से छूपा कर गहरे पानी के हवाले यूँ कर दे कि पानी की मौजों से कभी

وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

जाहिर होने का खतरा न हो ।

ये सब जानदार की तस्वीरों के मुतअल्लिक था ।

रहा नक्शा-रोज़ा-ए-मुबारका (यानी हुजूर ﷺ के रोज़े की तस्वीर) उस के जाइज़ होने में हरगिज़ कोई कलाम (बहेस) नहीं और न किसी तरह का शक । जिस तरह उन तस्वीरों (यानी जानदार की तस्वीरों) का हराम होना यकीनी हैं, यूँ ही इस के (यानी हुजूर के रोज़े का तस्वीर का) जाइज़ होना यकीनी व अज़माया हुआ है । हर (नबी की) शरीअत में जानदार की तस्वीर हराम फ़रमाई । हदीस नं 10 ने इस बात को साफ़ कर दिया ।

हदीस अब्वल में है कि एक तस्वीर बनाने वाले ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنه — की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की मैं तस्वीर बनाया करता हूँ इस का फ़तवा दीजिये- फ़रमाया पास आ वोह पास आया-फ़रमाया और पास आ वोह और पास आया यहाँ तक कि हज़रत ने अपना दस्ते मुबारक (हाथ शरीफ़) उस के सर पर रख दिया - फ़रमाया कि मैं तुझे न बताऊँ वोह हदीस जो मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ — से सुनी, फिर वोह हदीस बयान की जो तस्वीर बनाने वालों के जहन्नमी होने के मुतअल्लिक इरशाद फ़रमाई-उस ने निज़वत ही ठन्डी सोंस ली हज़रत ने फ़रमाया..... **وَمَنْ كَانَتْ أَمَتُ الْإِنْسَانِ** **لَمْ يَصْنَعْ فَعَلَيْكَ بِهَذِهِ الشَّجَرَةِ وَكُلِّ شَيْءٍ نَسِىَ فِيهِ رَوْحٌ**

अफ़सोस तुझ पर अगर वे बनाए न बन पड़े तो पेड़ और बगैर रूह वाली चीज़ों की तस्वीरें बनाया कर ।

अइम्म-ए-मज़ाहिबे अरबा (यानी इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद बिन हम्मबल) वगैरा ने इस के (यानी हुजूर के रोज़े की तस्वीर) के जाइज़ होने की दलीले साफ़ बयान फ़रमाई के तमाम मस्लकों की किताबें इस के सुबूत से भरी पड़ी हैं, इलाँ के मस्अला खुला हुआ और हक़ साबित है अगर अब्बास के वहेम को दूर करने के लिए और साबित क़दमी के लिए अइम्मा-ए-किराम व ओलमा-ए-आलाम की कुछ दलीलें इस बारे में पेश करेंगी के किन किन अक़बेरीन (बुजुर्गों) व वोह अज़ीम हसतीयों ने जिन पर एतेमाद किया जाए उन्होंने ने मज़ारे मुक़द्दस और उसी तरह नलैने मुक़द्दस (हुजूर ﷺ की जूतियाँ मुबारक) की तस्वीर बनाई और उन की तअजीम और उन से तबर्क़ हसिल करते — आए और इस के मुतअल्लिक क्या क्या कलमात मोमेनीन के दिल को ख़ूशी देने वाले और मुनाफ़ेक़ीन का जिस से दम ही निकल जाए इरशाद फ़रमाए । ① इमाम असीम बिन नसतास तावई मदनी ② इमाम मोहदिस जलीलुल क़द अबू नईम साहिबे हुसयतुल

- औलिया ③ इमाम मोहदिस अल्लामा अबूल फ़रज अब्दुर रहमान इब्ने जूजी हम्बली ④ इमामुल यमन इब्ने असाकर ⑤ इमाम ताजुद्दीन खाकहानी साहिबे फ़जरे मुनीर ⑥ अल्लामा सैय्यद नूरुद्दीन अली बिन अहमद समहूदी मदनी शाफ़ई साहिबे किताबुल वफ़ा वफ़ाउल वफ़ा ⑦ सैय्यदी आरिफ़ाबल्लाह मुहम्मद बिन सुलैमन जज़ूली साहिबुद दलाइल ⑧ इमाम मोहदिस फ़कीयह अहमद बिन हजर मक्की शाफ़ई साहिब जवाहरे मुनज्जम ⑨ अल्लामा हुसैन बिन मुहम्मद बिन हसन दियार वकरी साहिबे अल खमीस फ़ी अहवालुल नफ़से नफ़ीस — **صلی اللہ علیہ وسلم** ⑩ अल्लामा सैय्यदी मुहम्मद बिन अब्दुल बाकी ज़रकानी मालकी शारहे मुवाहिबुद दुनिया व मिनहु मुहम्मदिया ⑪ शेख़ मुहककिफ़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहदिस दहलवी साहिबे जजबुल क़लूब ⑫ मुहम्मदनिल आशिक़ बिन उमर हाफ़िज़ ख़मी, हनफ़ी, साहिबे खुलासतुल अख़बार तरजमी खुलासतिल वफ़ा, वग़ैराहम अइम्मा व ओलमा ने भजारे अक़दस व अकरम सैय्यदे आलम **صلی اللہ علیہ وسلم** व हज़राते सिद्दीके अक़बर व फ़ास्के आज़म **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** की क़वों के नक़्शे (तस्वीरें) बनाए ।

मुवाहिब और उस की शरह में है

②

وہذا ختمہا علی اسیر و خیر ہم فی مہدہ تصور القندسہ من
 صبح نہایت پر مدعا، بوالہبیس، ابن عساکری، کتابہ و تحفۃ العرش
 الصبیح منہا و فانیان احدہما بافتادہ من اسیر و لا حشری
 رہا ختم برہم و دیگر و تہذیبہا اکثر کتاب لہ المصنف فی بعض
 و فانی و قبالہ ہودی ایہا المستورہ و استہودی دہا مشہور و
 اور قلمبرہ منہ، منہ قبالہ عیدہ و منہ ای اللہ لہ مدونہ بعدہ
 حاشمہ قلمبرہ ارکس، فقہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و فانی
 حمودہ و منہ ای بکر برہم، اللہ تعالیٰ علیہا و علیہا و علیہا

المصنف: علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

استدین برہم، اللہ تعالیٰ علیہ

الاستدین برہم، اللہ تعالیٰ علیہ

حسرت و بعدہ من الشیخۃ و لا حشرہ لکرم با جہا اہما
 فی الیہا و شہدہا لخطا قلت و قد ذکرہ السبع جہا الامام
 الیہ و شہدہا لخطا فی حیدۃ القندس فی قلمبرہا ان ہویت
 مطبع المسکت برہم و دہا لہا حیدۃ القندسہ صکلا

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

①

مرحباً اور اس کی مراد یہ ہے کہ وہ دوی نورانہ و انعام میں
 طوبی اللہ منہ منہ و فانیان احدہما بافتادہ من اسیر و لا حشری
 غایبہ و شہدہا لخطا قلت و قد ذکرہ السبع جہا الامام
 فی قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و فانیان احدہما بافتادہ من اسیر و لا حشری
 کبر اسیر علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و فانیان احدہما بافتادہ من اسیر و لا حشری
 انہی منہ، اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و فانیان احدہما بافتادہ من اسیر و لا حشری

المصنف: علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

استدین برہم، اللہ تعالیٰ علیہ

الاستدین برہم، اللہ تعالیٰ علیہ

حسرت و بعدہ من الشیخۃ و لا حشرہ لکرم با جہا اہما
 فی الیہا و شہدہا لخطا قلت و قد ذکرہ السبع جہا الامام
 الیہ و شہدہا لخطا فی حیدۃ القندس فی قلمبرہا ان ہویت
 مطبع المسکت برہم و دہا لہا حیدۃ القندسہ صکلا

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قلمبرہ علی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قد رزقنا من الله تعالى عليه علم
قد رزقنا من الله تعالى عليه علم

قدیر ہے مگر عیسیٰ، اللہ صلاۃ علیہ وسلم

صلى الله عليه وسلم

الْوَكْرُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

کتاب رخصت از محمد علی حسینی

(c)

ثم عقبه بقوله ونسب ابن حجر هذا النسب الى الكفر الخ ولا
دوس على هذا العلم في التصحيح من النسخ والله تعالى اعلم
عشر م - - - - -
رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ان يتبعوا في حوب بيته
فدس ذراع اسلام على ابي بكر الصديق رضي الله تعالى عنه
ذكره الله عليه لان راسه عند منبر رسول الله صلى الله تعالى
عليه وسلم ثم يتبعوا في بيته ايضا قد دس ح السلام من سب
محمد رضي الله تعالى عنه لان راسه عند منبره صلى الله تعالى
عليه وسلم انزلت بكريمة على صاحب الذكره عليه السلام
ثم قال بعد التصحيح احقوف وضعا على هذه الكيفية لا
لحافظه عند تحييه الواسع ايهم الخ

अस्लाह — عزوجل उँच नीच की मुसीबत व आफ़त से बचाए दलाइलुल

खैरात शरीफ को लिखे हुए पौने पोंच सौ बरस गुजरे जब से यह किताब उमदह

मशरिक व मगरिब अरब व अजम , तमाम जहान के ओलमा व औलिया व नेकों में दीन व ईमान की हिफाजत का वजीफा हो रही है और ये इसकी खूबी व खुदा और रसूल ————— **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** ————— की बारगाह में इस

की कुबूलियत जैद व उमर (यानी इसके उसके) मिटाए नहीं मिट सकती ।

————— **ہم تیراں جہاں بستہ اس سلسلہ اندہ رو بہ از حیلہ چہاں بگسلہ اس سلسلہ راہ** —————

हैं अब नये जमाने के घराने में वोह गुमराह भी पैदा हुए जो —————

————— **عیاذ باللہ** ————— (अल्लाह की पनाह) दलाइलुल खैरात को शिर्क व बिदअत की कान (feactari) कहते हैं, मगर उन के बकने से उम्मेत महूमा का इत्तेफाक व एतेमाद नहीं टूट सकता । ————— **ہر کسے بر خلقت خودنی تندہ** —————

कश्फुन्नू में है **دلائل الخیرات آیہ**

وَمِنْ آيَاتِ اللَّهِ قَوْلُ طِبِّ بَقِيَرَاءِ يَتِيمٍ فِي الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ وَذَلَالِ مِثْلِ
اِخْتِلَافٍ فِي النَّسَبِ نَكْثُورٍ وَآيَتُهَا عَنْ التَّوْفِيقِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى
لَكِنَّ الْمُعْتَبِرَ نَفَقَةُ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ مُحَمَّدٍ السَّمِيعِيِّ كَانَ التَّوْفِيقُ مَحْصَا
قَبْلَ وَقَاتِهِ بِثَمَانِ سِنِينَ سَادِسَ رَبِيعِ الْأَوَّلِ ١٢٨٢ مَلْحُظًا —————

यान किताब दलाइलुल खैरात अल्लाह तआला की आयतों से एक आयत है के मशरिक व मगरिब हर जगह हमेशा पढ़ी जाती है उस के नुस्खे मुख्तलिफ हैं के उसके मुअल्लिफ (लिखक) ————— **رحمۃ اللہ تعالیٰ** ————— से उस की रिवायतें बहुत ज्यादा हैं मगर भरोसे मन्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद सहेली का नुस्खा है के मुसन्निफ (लिखक) **علیہ السلام** ने अपने इत्तिकाल से आठ बरस पहले 6 रबीउल अब्वाल 862 हिजरी को उसे दोबारा पढ़ कर सही फरमाया था ।

⑬ अल्लामा मुहम्मद बिन अहमद बिन अली फासी कसरी "मुताले" में फरमाते हैं...

————— **أَعْقَبُ التَّوْفِيقِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَرَحْمَتِي عَنْهُ تَرْجُمَةُ**
الْأَسْمَاءِ بِتَرْجُمَةٍ صَفَةِ التَّرْوِضَةِ الْمُبَارَكَةِ مَوْافِقًا وَتَابِعًا
لِلشَّيْخِ تَاجِ الدِّينِ الْفَاكِهَةِ فَإِنَّهُ عَقَدَ فِي كِتَابِهِ الْفَجْرِ
الْمُبِيرِ بَيَانًا فِي صِفَةِ الْقُبُورِ الْمُفْتَدَسَةِ وَمِنْ قَوَائِدِ ذَلِكَ أَنَّ تَزْوَدَ
الْمِثَالِ مَنْ لَمْ يَتِمَّ مِنْ زِيَارَةِ التَّرْوِضَةِ وَبِشَايِدِهِ مَشْتَقٌ
وَيَلْتَمِهُ وَيُزَادُ فِيهِ جِهَادُ شَوْقًا —————

किताब दलाइलुल खैरात के मुअल्लिफ (लेखक) ने हुजूर सैय्यदे आलम —

ﷺ के नामों के जिक्र के बाद आप के रोज़-ए-मुबारका के मुअल्लिफ़ इमाम ताजुद्दीन खाकहानी के जरीये से फ़रमाया कि उन्होंने ने भी अपनी किताब "फ़जरे मुनीर" में हुजूर के रोज़े मुक़दसा की तस्वीर में ख़ास एक बाब (chapter) जिक्र किया और उस में बहुत फ़ायदे हैं जैसे येह के जिसे हुजूर के रोज़ा-ए-मुबारका की जियारत का मौक़ा न मिले वोह हुजूर के रोज़ा-ए-पाक की तस्वीर की जियारत करे दीदार के ख़्वाहिश मन्द उसे देखे और बोसा दे के इससे नबी ﷺ की मुहब्बत और हुजूर का शौक़ दिल में बड़ेगा ।

اللَّهُمَّ ارزُقْنَا آمِينَ

(14) उसी में है.....

قَدْ كُنْتُ رَأَيْتُ تَالِيًا لِبَعْضِ الْمَشَارِقَةِ يَقُولُ
فِيهِ إِنَّهُ يَنْبَغِي لِذَا كِرَامَتِهِ الْجَلَالَةِ مِنَ الْمُؤِيدِينَ أَنْ يَكْتَبَهُ
بِالذَّهَبِ فِي وَرَاقَةٍ وَيَجْعَلُهُ نُصْبَ عَيْنَيْهِ فَإِذَا صَوَّرَ قَابِرِي
هَذَا الْكِتَابِ الرَّوضَةِ صَوْرَةً حَسَنَةً يَأْتُوا فِي حَسَنَةٍ وَخُصُوصًا
بِالذَّهَبِ فَهُوَ مِنْ مَعْنَى ذَلِكَ

(फ़रमाते हैं) मैं ने बाज़ ओलमा-ए-मशारिक की किताबों में देखा के जो मुरीद इसमें पाक — (अल्लाह) का जिक्र करें उसे चाहिये के नामे पाक अल्लाह एक वरक़ में सोने से लिख कर अपनी नज़र के सामने रखे तो जब उस किताब को पढ़ने वाला रोज़ा-ए-मुक़दसा की ख़ूबसूरत तस्वीर ख़ूशनुमा रंगों से रंगीन ख़ुसूसन सोने के पानी से बनाए तो उसी दलील से है ।

(15) उसी में है..... قَدْ ذَكَرَ بَعْضُ مَنْ تَكَلَّمَ

عَلَى الْأَذْكَارِ وَكَيْفِيَّةِ التَّوْبَةِ بِمَا آتَاهُ إِذَا كَمَلَ لِآلِهِ إِلَّا اللَّهُ
بِمُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلْيُشْخَصْ
بَيْنَ عَيْنَيْهِ ذَاتَهُ الْكَرِيمَةَ بِشَرِيَّتِهِ مِنْ نُورٍ فِي مَيَّابٍ مِنْ
نُورٍ بَعْضُ شَطِيعِ صَوْرَتِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي
رُوحَانِيَّةٍ وَيَتَأَمَّلُهَا تَالِيًا يَتَكَلَّمُ بِهِ مِنَ الْإِسْتِعَادَةِ مِنْ أَشْرَارِهِ

وَالْأَقْبَابِ مِنَ النَّوَارِ صَلَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَإِنْ
 لَمْ يَزَلْ تَشْغَلْ صُورَتَهُ فَيَرَى كَأَنَّهُ جَالِسٌ عِنْدَ قَبْرِهِ
 الْمُبَارَكِ يَسِيرُ إِلَيْهِ مَتًى مَادَا كَرِهَ فَإِنَّ الْقَلْبَ مَتًى مَا سَغَلَهُ
 شَيْءٌ اِفْتَنَعَ مِنْ قَبُولِ غَيْرِهِ فِي الْوَقْتِ إِلَى آخِرِ كَلَامِهِ فَيَخْتَالِجُ
 إِلَى تَصَوُّرِ الرُّوحَانَةِ الْمَشْرُوقَةِ وَالْقَبُورِ الْمُقَدَّسَةِ لِيَعْرِفَ
 صُورَتَهَا وَيَتَحَصَّنَ بِهَا بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَنْ لَمْ يَعْرِفْهَا مِنَ الْمُصَلِّينَ
 عَلَيْهِ فِي هَذَا الْكِتَابِ وَهُمْ عَامَّةُ النَّاسِ وَتَحْصُورُهُمْ —

बाज औलिया-ए-किराम जिन्हों ने मुरीदीन की तरबीयत के लिए जिक्र की
 कैफ़ीयत बयान की - फ़रमाते हैं कि जब **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ**
سَلَامٌ عَلَى عَبْدِكَ का जिक्र कर ले तो चाहिये क हुजुरे अक़दस **سَلَامٌ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**
 का तसव्वर अपनी आँखों में जमाए बशरी सूरत नूरानी सूरत नूर के लिबास में ताके
 हुजुरे अक़दस **سَلَامٌ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की सूरते करीमा उस के आईन-ए-दिल में
 जम जाए और उससे वोह मुहब्बत पैदा हो जिस के सबब हुजूर के असरार (भेद)
 से फ़ायदा ले हुजूर के आनवार के फूल चुने और जिसे येह तसव्वर न आ सके वोह
 यही ख्याल जमाए के गोया मज़ारे मुबारक के सामने हाज़िर है और हर बार जब
 जिक्र में हुजूर का नामे पाक आए तसव्वर में मज़ारे अक़दस की तरफ़ इशारा करता
 जाए के दिल जब एक चीज़ से डूब जाता है फिर उस वक़्त दूसरी चीज़ कुबूल नहीं
 करता तो अब हुजूर के रोज़ा-ए-मुतहरह व (बुरगों) के भजाएत की तस्वीर बनाने
 की ज़रूरत हुई के जिन दलाइलुल ख़ैरत पढ़ने वालों ने उन की ज़ियारत न की और
 अक्सर ऐते ही हैं वोह इन्हें पहचान लें और जिक्र के वक़्त उन का तसव्वर ज़हेन
 में जमाएँ !

وَقَدْ اسْتَنَابُوا مِثَالِ النَّعْلِ عَنِ النَّعْلِ उसी में है ①
 وَجَعَلُوا مِنَ الْإِكْوَامِ وَالْإِحْوَامِ مَا لَمْ يَتَوَبَّ عَنْهُ وَكَرُّوا إِلَهُ خَوَامٍ
 وَبَرَكَاتٍ وَقَدْ خَرَّبَتْ وَقَاتُوا فِيهِ اشْتَعَارًا كَثِيرًا وَانْعَوَانِي
 صُورَتِهِ وَرَوَدَهُ بِالْأَسَانِيدِ وَقَدْ قَالَ الْقَائِلُ إِذَا مَا الشُّوقُ
 أَطْلَقَنِي إِلَيْهَا وَلَمْ أَظْفَرْ بِطَلُوبِي لَدَيْهَا : نَمَشْتُ مِثَالَهَا

فِي الْكَفِّ نَقْشًا وَقُلْتُ إِنَّا ظَرَفْنَا قَصُورًا عَلَيْهَا:

ओलमा-ए किराम ने नाले मुकद्दस (हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की जूतियों मुबारक) की तस्वीर को हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की अस्ल जूतियों की तरह बताया और उस के लिए वही इज्जत व एहताराम जो अस्ल के लिए था साबित ठहराया और उस तस्वीर मुबारका के लिए उस की खूबियों व बरकते जिक्र फरमाई और बिला शुबह बोह तजुर्बे में आए और उस की शान में बहुत ज्यादा अश्शार कहे और उस की तस्वीर में रिसाले (किताबें) लिखी और उसे सनदों के साथ रिवायत किया और कहने वाले ने कहा के "जब उसकी आतिशे शौक मेरे सीने में भड़कती है और उसका दीदार नसीब नहीं होता (यानी हुजूर की नलैन शरीफ देखने की तड़प दिल में उठती है और उसका दीदार नसीब नहीं होता) उसकी तस्वीर हाथ पर खीच कर आँख से कहता हूँ इसी पर बस (सब) कर ।

①7 अल्लामा ताज फ़ाकहानी "फ़जरे मुनीर" में फ़रमाते हैं.....

مِنْ قَوَائِدِ

ذَلِكَ إِنْ تَمَّ عِنْدَهُ رِيَاةُ التَّوَضُّعِ فَلْيَبْرَزْ مِثْلَهَا وَلْيَلِثْهُ
مُشَاقًّا لَا مَنَّةَ نَابَ مَنَابِ الْأَصْلِ كَمَا قَدْ نَابَ مِثَالُ نَعْلِهِ
الْشَّرِيفَةِ مَنَابَ عَيْنِهَا فِي الْمَنَافِعِ وَالْخَوَاصِّ سَهَادَةُ التَّجَرُّبَةِ
الصَّحِيحَةِ وَلِذَا جَعَلُوا لَهُ مِنَ الْكُوَامِرِ وَالْإِحْطَارِ مَا يَحْكُمُونَ
بِلَمَنُوبٍ عَنْهُ الْخ

नक्शा रोज़ा-ए-मुबारक (यानी हुजूर के रोज़ा-ए-मुबारक की तस्वीर) के बनाने में एक फ़ायदा यह है के जिसे अस्ल रोज़े अक़द्स की ज़ियारत न मिली वोह इस तस्वीर की जियारत करे और शौके दिल के साथ उसे बोसा दे कि येह अस्ल रोज़े की ही तरह है जैसे हुजूर के नलैन की तस्वीर यकीनन खूबियों वाली व फ़ायदे मन्द है उसी तरह येह भी है जिस पर सही तजुर्बा गवाह हैं लिहाज़ा ओलमा-ए-दीन ने इन तस्वीरों की इज्जत व अज़मत वही रखी जो अस्ल की रखते हैं ।

①8 हज़रत मुसनिफ़ दलाइलुल ख़ैरात سراج النبوة उस की शरहे कबीर में इसे नक्ल फ़रमाते हैं और अल्लामा मद्दूह की तरह बयान फ़रमाते हैं.....

حَيْثُ قَالَ إِنَّمَا ذَكَرْتُهَا تَابُوا بِشَيْخِ تَابِجِ الدِّينِ

- (२) इसका आत्मद भुङ्गना दुःख कुतलाही म. से दूर दुःख ही का कां दुःख अपनी जिताव पुरतिबुद्ध धीया व निम्न मुक्तिय में फरमाते है..

ابن هاشم بن عمار، فعلم الكرمي، عضد العدة والتليم
في جزع مفرد، ديتيه قروا، وسماحا وكذا الفود، بالتأليف ابواحق
ابراهيم بن محمد بن خلف السلمي المستصوب، ابن الحاج من اصل
المروية، بالاندلس، وكذا اغيارها، وفيه در ابن اليمين بن عمار،
حيث قال،

يا منبدا في رسم ربيع خال
لا حبة مانوا وعصر خال
صافع بها حدا وعفرو حبة
لمحلك الاسى الشريف العالى
وثذكوت عهد العقيق ثاثرت
والجود والمعروف والا فضال
اون احفاني لوط ونعاليها
وهناشد الدوارس الا طلال
يا شبه نعل المصطفى روى القفا
والثم ثوى الاثر الكريم مجدا
في تربها وحيد اذ فوط تغال
همت لم آك العيون وقد ناله
شوقا عقيق المدمع المصطال
نوان حدى يحتذى نعلها
ارضى سميت عزاميد الا ذلال
دع مذبح اثار وذكرو ما ثور
ان فنوت هنه بلثم ذوالتمثال
اذكرونى قدما لوالا خلدتم انتلى

وقا العيون بغير ما أهمال
بلغت من ميل المنى آمالي
أهيا لا لتقاط

(इस को) खुलासा देह हैं कि, अबून यमन इने अस्फ़ाक ने नमैने अक़दस को तमाम... अल्लिह एत स्वास किलाब लिखी जिसे मैं ने उस्ताद से पढ़ कर और उस्ताद ने मुन का रिवायत किया और इसी तरह इने अन्तहाज उन्-द-द-... और ओ... म बिह-सुल फलबे लिखी ओ, जन्म-ह **عز وجل** 5, 11 हैं... असाक की... इने... लिखा... की... इन... की... याद छाड़ और मुस्तफ़ा **صلی اللہ علیہ وسلم** के... शरीफा की... बोली कर रहे नसीब अगर तुझे उन तस्वीर नलैने मुबारक का दोमा नले अपना चहरह उस पर रख और उस को बाक पर अपना चेहरह बन.....अए नमैने मुस्तफ़ा **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** का तस्वीर तेरी इज्जत व शरफ़े बुलन्दी पर मेरा जान कुर्बान तुझे देख कर आँखें ऐसी बह निकली के अब यमना बहुत दूर है तुझे देख कर इने (इन आँखों को) मदीने की वादी-ए-अर्काक में मुस्तफ़ा **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** की रफ़्तार याद आ गई लिहाजा अपने बहत आँसूओ के सुख सुख कमता मोर्त निछावर कर रहे हैं-अए तस्वीर नलैने मुबारक तू ने मुझे वोह कदमे पाक याद दिलाया जिस के बुलन्दी वजूद व एहसान व फज़ल बहुत ज़माने पहले से हैं अगर मेरा चेहरह काट कर (हुज़ूर **صلی اللہ علیہ وسلم**) के क़दम के लिए जूता बनाते तो दिल की तमन्ना पूरी हो जाती या मेरी आँख उन की जूतियों मुबारक के लिए ज़मीन होती तो उस के ज़मान होने से (मेरी आँख) इज्जत का आसमान बन जाती। **عجز الی اللہ خیر الی الی** :-

(22) अबूल हाकम बिन अब्दुर रहमान अलशहीरया बिन अतरहल (जिन के मुत्अल्लिक) इमाम बक्यातुल हिप्फाज इब्ने हजर असकलानी ने तबसीर में उन का जिक्र लिखा । हुजूर के नलैने मुबारक की तारीफ में उन का कसीदा 'गुरा' शेख इब्नुल हाज ने अपनी उसी किताब में जिक्र किया (और) इमाम कुस्तलानी ने उस कसीदे के बारे में—**مَا أَحْسَنًا** कहा, "यानी क्या खूब फरमाया" उस के कुछ अश्रार (किताब) मुवहिब में येह है.....

هنا اناني يوم وليلي لامر

فَتَبَصَّرَ عَالِيَهُ وَكَانَ اسْمُهَا عَامِلَهُ

لهاش عات فوق البحر من حدها

مثال لفعل من احب هو يتة

امشد فی راجل اکرم من مشے

ومن لی بوقع الشیل فی حروہنتی

يُحْفَنُ بِلِغْلِ الْحَقِّ يَرْتَقِي سَاحِبُهُ
يُزَاحِمُنِي لُثْمُهُ وَفُزَاحِيهِ
وَالشَّمْطُ طَوْرًا وَطَوْرًا لَا زَمَهُ
عَلَى وَحْنِي خَطَا هَذَا يَدَامُهُ
بِقَلْبِي بِلِغْلِ الْقَلْبِ يَبْرُدُ حَاجِيهِ
لَطَابُ الْحَاذِيَةِ وَقَدْسُ خَادِيهِ
وَعَنْتُ بِأَعْيَانِ الْأَرَائِكِ حَامِيهِ

وَرَابِطُهُ فَوْقَ الشُّؤْنِ عَتِيْمُهُ
يُودِ هَلَالُ الْأَفْقِ لَوَانُهُ هُوَ
أَجْرُ عَلِيٍّ رَايَ وَوَحْهَهُ أَدْعُهُ
أَجْرُكَ خَذِي شَمُّ أَحْسَبُ قَعَهُ
سَاحِبُهُ فَوْقَ التَّرَائِبِ عَوْدُهُ
الْأَبَايِ تَهْتَالُ بِلِغْلِ مُحَمَّدٍ
سَلَامُهُ عَلَيْهِ كُلَّمَا هَبَّتِ لِلصَّبَا

यानी अपने महबूब **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** की नलैने पाक की तस्वीर को मैं दोस्त रखता हूँ अपने सर और मुँह पर रखता और रात दिन उसे बोसा देता हूँ, अपने सर और मुँह पर रखता और कभी चूमता कभी सीने से लगाता हूँ मैं अपने ध्यान में उसे महबूब **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** के पाए अक़दस (पैर मुबारक) में तसव्वर करता हूँ तो बहुत ज़्यादा सच्चे दिल से तसव्वर से गोया अपनी आँखों से जागते में देख लेता हूँ उस नलैने पाक के नक्श (तस्वीर) को अपने चेहरह पर हरकत देता हूँ और यह ख्याल करता हूँ कि गोया हुज़ूर **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** उसे पहने हुए मेरे चेहरह पर चल रहे हैं। आह ! कौन ऐसी सूरत कर दे के वोह हुज़ूर के पैर मुबारक जो आठवे आसमान के सितारे के सरो पर बुलन्द हुए उन की जूती मुबारक पर चलने में मेरे चेहरह पर पड़े मैं नलैने मुबारक की तस्वीर को अपने सीने पर दिल का तअवीज़ बना कर रखूँगा शायद दिल की आँख ठन्ड़ी हो मैं उसे सर पर आँखों का तअवीज़ बना कर बान्धूँगा शायद बहती पल्के रुके । सुन लो तस्वीरि नलैने मुकद्दस पर मेरा दाप कुर्बान-क्या अच्छा है उस का बनाने वाला और जो उस की खिदमत करे पाक हो जाए । नये चांद की तमन्ना है काश आसमान से उतर कर इस नलैने मुकद्दस को चूमने में हम और वोह आपस में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते अल्लाह **صلی اللہ علیہ وسلم** का सलाम मुहम्मह **صلی اللہ علیہ وسلم** पर जब तक सुबह की खूशगवार हवा चले और जब तक दरख्तों की झालियों पर कबूतर गूँजें । (अमिन) ②३ उसी मुवाहिबुद दुनिया में है.....

مِنْ بَعْضِ مَا ذَكَرَ مِنْ فَضْلِهَا وَحَوْبِ
مِنْ نَفْعِهَا وَبَرَكَتِهَا مَا ذَكَرَهُ أَبُو جَعْفَرٍ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الْمُجِيدِ

وَكَانَ شَيْخًا صَالِحًا وَرَأَى قَالَ حَدَّثْتُ هَذَا الْمِثَالَ بِبَعْضِ الطَّبِيبِ
فَجَاءَنِي يَوْمًا فَقَالَ رَأَيْتُ الْبَارِحَةَ مِنْ بَرَكَةِ هَذَا الشَّعْلِ
عَجَبًا صَابَ رَأْسِي وَجَعٌ شَدِيدٌ كَأَنَّهُ يَهْلِكُهَا فَجَلَعْتُ الشَّعْلَ
عَلَى مَوْجِعِ الْوَجَعِ وَقُلْتُ االلَّهُمَّ اشْفِ بِبَرَكَةِ هَذَا الشَّعْلِ
فَشَفَاها الله بالبحرین

नलैने मुबारक की फज़ीलतें जो ज़िक्र किये गए और उस के फ़ायदे व
बरकतें जो तजुर्वों में आए उन में से वोह हैं जो शेख़ सालेह साहिबे वरका व तकवा
अबू जाफ़र अहमद बिन अब्दुल मजीद ने बयान फ़रमाया के मैं ने नलैने मुकद्दस की
तस्वीर अपने बाज़ शार्गिदों को बना दी एक रोज़ उन्होंने ने आ कर कहा रात में ने
इस तस्वीर मुबारक की अज़िब बरकत देखी मेरी बीवी को एक सख़्त दर्द हुआ के
मरने के करीब हो गई मैं ने नलैने मुबारक की तस्वीर को दर्द की जगह पर रख
कर दुआ की के इलाही इस की बरकत से शिफ़ा दे, अल्लाह-**عز وجل** ने फ़ौरन
शिफ़ा दख़ी ।

(24) और इमाम कुस्तलानी फ़रमाते हैं के अबूल इसहाक इब्राहीम बिन अलहाज
फ़रमाते हैं के उनके शेख़, शेख़ अबू कासिम बिन मुहम्मद फ़रमाते है... **وَمَا جَوَّبَ**

مِنْ بَرَكَةِ أَنْ أَمْسَكَ عِنْدَهُ مَتَبَرَكًا بِهِ كَانَ أَمَانًا لَهُ مِنْ بَعْضِ
النَّجَاةِ وَغَلَبَةِ الْعَدَاةِ وَخَرَزَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ وَمِنْ كُلِّ حَايِدٍ
وَأَنْ أَمْسَكَهُ الْحَامِلُ يَلْبِثُ فِيهَا وَقَدْ اسْتَدْعَاهَا الطَّلُقُ تَيْسُورًا
مَا يَحْتَوِي اللَّهُ تَعَالَى وَقُوَّتِهِ

नलैने मुबारक की तस्वीर की आजमाई हुई बरकतों से है के जो शख्स उसे
अपने पास रखे ज़ालिमों के दुल्म और दुश्मनों के ग़लबे से आन पाए और वोह
तस्वीर मुबारक हर सरकश शैतान हर हसद करने वाले की नुरी नज़र से उस की
पनाह हो जाए और हामला (पिट वाली औरत) के दर्द के वक़्त में अगर उसे अपने
दाहिने हाथ में ले अल्लाह के करम से उस का काम आसान हो ।

(25) अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद मक़री तलसमानी ने इस बारे में दो ख़ास किताबें
लिखी एक

التفاتی العناییه فی وصف نعل خیر البریه

के बहुत फायदे मन्द है और दूसरी **فَتْحُ الْمُتَعَالِ فِي مَدْحِ خَيْرِ الشَّعَالِ**

काफ़ी बड़ी व जामए हैं इन किताबों में अजीब अजीब फ़ज़ीलते व बरकते व आफ़तों के दूर होने व हाज़त पूरी होने के मुत्अल्लिक जो नलैने मुबारक के फ़ायदे लिखे वोह ख़ूद देखे गए और पहले के व हर ज़माने के बुजुर्गों ने देखे उसे ख़ूब ख़ूब बयान किया हैं उनका ज़िक्र कफ़ी तवील हैं जो चाहे — **فَتْحُ الْمُتَعَالِ** — को पढ़े

अब हम मुख़्तसर उन बाकी अइम्मा व ओलमा के कुछ ही नाम बयान करते हैं जिन्होंने नलैने मुबारक की तस्वीरों को बनाया, बनवाया, बना कर अपने शार्गिदों को अता फ़रमाया उस से तबर्स्क किया उस की तअरीफ़े लिखी उस से फ़ैज़ व बरकत हासिल करने उसे सर आँखों पर रखने की रग़बत दिलाई हदीसों की तरह एहतेमाम के साथ उस की रिवायतें फ़रमाई जिसे तफ़सील देखनी हो — **فَتْحُ الْمُتَعَالِ** — वग़ैरा को पढ़े ।

(26) इमामे अजल अबू ऊवेस अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन ऊवेस अबूल फज़ल बिन मालिक बिन अबी आमिर असबिह मदनी, के मदीना तय्यबा के बड़े ओलमा व अइम्म-ए-मोहदेसीन व रिजाल सही मुस्लिम व सुनन अबी दाऊद तिर्मिज़ी व नसाई व इब्ने माजा और तबे तबाईन के आला तबके से है इमाम मालिक **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** के मतीजे है 167 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया उन्होंने ने ख़ूद अपने वासते इमाम मालिक वग़ैरा अकाबिरे तबाईन व तबे ताबईन के ज़माने में हुज़ूरे अक़दस — **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** — की नलैने अक़दस बनवा कर अपने पास सखी और ज़माना व ज़माना उस नलैन के नक्शे हर तबके के ओलमा लेते रहे ।

(27) उनके साहबज़ादे इमाम मुस्लिम के उस्ताद और बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ के रावियों में से हैं और शुरू के तबे ताबईन के आला तबके से है इमाम शाफ़ई व इमाम अहमद — **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** — के साथ के हैं, 226 हिजरी में वफ़ात पाई ।

(28) उन के शागिर्द अबू यइयहा बिन अबी मैसरह (29) उन के शागिर्द अबू मुहम्मद इब्राहीम बिन सहेल सुबती (30) उन के शागिर्द अबू सईद अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह मक्की (31) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन जाफ़र तमीमी (32) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन हुसैन फ़ारसी (33) उनके शागिर्द शेख़ अबू ज़करया अब्दुर रहीम बिन अहमद बिन नस बिन इसहाक़ बुख़ारी (34) उनके शागिर्द शेख़ फ़कीयह अबूल क़सिम हली बिन अब्दुरसलाम बिन हसन रूम्ली (35) उनके शागिर्द शेख़ अथाज़ (36) दूसरे शागिर्द इमामे अक़मली हाफ़िज़ुल हदीस क़ाज़ी अबू बकर इब्ने अरबी शिबीली उन्दलेसी (37) इन दोनों के शागिर्द इमाम इब्ने अरबी के साहबज़ादे फ़कीह अबू ज़ैद अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (38) उन के शागिर्द इब्नुल हय्या (39) उनके शागिर्द शेख़ इब्नुल तबर तोलस्नी (40) उनके शागिर्द शेख़ इब्ने फ़हेद मक्की (41) इमामे अजल

इन्हे अरबी मम्दूह के दूसरे शागिर्द अबूल कासिम खलफ बिन बशकुवाल (42) उनके शागिर्द अबू जाफ़र अहमद बिन अली ऊसी जिन के शागिर्द अबूल कासिम बिन मुहम्मद और उनके शागिर्द अबू इसहाक इब्राहीम बिन हाज, उन के शागिर्द अबूल यमन इन्हे असाकर है जिन के अकवाले तय्यबा उपर लिखे जा चुके है (43) इमाम इस्माईल बिन अबी ऊवेस मदनी मम्दूह के दूसरे शागिर्द अबू इसहाक इब्राहीम बिन हुसैन (44) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन अहमद खजारी असबहानी (45) उनके शागिर्द अबू उसमान सअदी बिन हसन तसतरी (46) उनके शागिर्द अबू बकर मुहम्मद बिन अदी बिन अली मुनकरी (47) उनके शागिर्द अबू तालिब अब्दुल्लाह बिन हसन बिन अहमद अन्बरी (48) उनके शागिर्द अबू मुहम्मद अब्दुल अजीज़ बिन अहमद कनानी (49) उनके शागिर्द अबू मुहम्मद हैबतुल्लाह बिन अहमद बिन मुहम्मद अफ़फ़ानी व मश्की (50) उन के शागिर्द हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद बिन अहमद सिकन्दरी (51) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान तजीबी (52) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सुबती, उनके शागिर्द अबू इसहाक इब्राहीम बिन अलहाज सलमी मम्दूह उनके शागिर्द इन्हे असाकर (53) उनके शागिर्द बद् फ़ास्की-येह तीन सिलसिले सलासिले हदीस की तरह थे इन के अलावा (54) इमाम अबू हिफ़्स उमर फ़ाकहानी इसकन्दरानी (55) शेख़ यूसुफ़ तताई मालकी (56) फ़कीहे अबू अब्दुल्लाह बिन सलार (57) फ़कीह मोहदीस अबू याकूब (58) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन रशीद फ़हरी (59) हाफ़िज़ शहीर अबूल रबीअ बिन सालिम कुलाई (60) उनके शागिर्द हाफ़िज़ अब्दुल्लाह बिन आबार कज़ाई (61) अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन जाबिर वादी (62) ख़तीब अबू अब्दुल्लाह बिन मरजूक़ तलसमानी (63) इन्हे अब्दुल मालिक मराकशी (64) शेख़ अबूल हेज़ाल (65) अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हक़ अन्सारो मअरुफ़ इन्हे केसाब (66) शेख़ फ़तहुल्लाह हलबी बैलूनी (67) फ़ाज़ी शम्सुद्दीन जैफ़ुल्लाह तुराबी रशीदी (68) शेख़ अब्दुल मुन्अम सुयूती (69) मुहम्मद बिन फ़रज सुबती (70) शेख़ इन्हे हबीबुन्नबी जिन से अल्लामा तलसमानी ने हुज़ूर के रोज़-ए-मुबारक की तस्वीर की अजीब फ़ायदे मन्द बरकते रिवायत की (71) सैय्यद मुहम्मद मूसा हुसैनी मालकी मआसर अल्लामा मम्दूह (72) सैय्यद जमालुद्दीन मोहदीस साहिबे रोज़तुल एहबाब (73) अल्लामा शहबुद्दीन ख़फ़ाज़ी जिन्होंने फ़ताहुल मेताल की तअरीफ़ की — *مؤلف حسن* — फ़रमाया "यानी वोह ख़ूब किताब है (74) फ़ज़िले कातिब चलपी साहिबे कश्फ़ुल जुनून (75) फ़ाज़िल अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाकी ज़रकानी शारहे मुवाहिब व मोता इमाम मालिक । अब और पाँच अइम्मा-ए-किराम के नाम पर इस्तेताम कीजिये जिन के बड़े इमाम होने पर सब का इस्तेफ़ाक़ हैं और उनकी शान व अज़मत् हर मुत्क में मशहूर व मअरुफ़ हैं (76) इमामे अज़ल हाफ़िज़ुल हदीस जैनुद्दीन ईराकी उस्ताद

इमामुल शान इब्ने हजर असकलानी साहिबुल 'फयए सीरत' वगैरा (77) उनके साहबजादे अल्लामा-ए-अजीम सैय्यदी अबू जरअ ईराकी (78) इमामे अजल सिराजुल फिकाह वल हर्दास वल मिल्लते वदीन विलफिनी (79) इमामे जलील मोहदिसे नबील हाफिज़ शम्सुद्दीन सखादी (80) इमामे अजल व अकरम अल्लामा खातिमुल हिफ्फाज़ वल मोहदेसीन जलालुल मिल्लते व 'शरअए व ददीन' अब्दुर रहमान बिन अबी बकर सुयूती —

مَنْ رَضِيَ اللَّهَ تَعَالَى عَنْهُمْ وَعَنْهُمْ يَوْمَ الدِّينِ آمِينَ يَا رَبِّ الْمُسْلِمِينَ मज़ारे अक़दस की तस्वीर ताबाईने किराम और नलेने मुक़ददस की तस्वीर तबे तबाईने आलाम से साबित और जब से आज तक हर कर्बालें व तबके के ओलमा व सलेहा में इस का वजूद व राएज रहा अकाबिरे दीन (बड़े बड़े बुजुर्ग) उन से तबस्क़ करते और उनकी इज्जत व तअज़ीम रखते आए हैं, तो अब इन्हें बुरी बिकअत व शिक व हराम न कहेगा मगर जाहिल बेबक़ या गुमराह बद दीन बीमार व ना पाक दिल **وَالْعِيَاذُ بِاللَّهِ مِنْ مِثَالِ الْعَلَّالِ**

आज कल के किसी नये (चन्द फ़िक्ताबों) के पढ़े हुए छेटी व नाक़िस अक्ल रखने वाले की बात उन बड़े बड़े अइम्म-ए-दीन व उन बड़े धरोसे मन्द ओलमा के इरशादाते आलिया के मुक़ाबले में किसी दीनदार अक्ल रखने वाले के नज़दीक क्या हिसाबत रखती हैं। अक्ल मन्द इन्साफ़ पसंद के लिए इसी क़द कफ़ी है। **وَاللَّهِ الْمَهَادَى وَوَلِي** —

अलहमदुलिल्लाह, के **الْأَيَاوِي بِهِ ثَقَتِي وَعَلَيْهِ اعْتِمَادِي** — येह मुख़्तसर वाज़ेह सही जवाब आख़िर ज़िल हिज्जा मुबारक 1315 हिज़री के चन्द जलसों में मुकम्मल हुआ और उसी लिहाज़ से इसका नाम **شَفَارُ الْوَالِ فِي صَوْرِ الْحَبِيبِ** **أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا** हुआ **وَمُزَارَهُ وَنَوَالِهِ** —

इस तहरीर के चन्द माह बाद बाज़ साहिबों ने इसके मुख़ालिफ़ आज कल के कुछ लोगों की तहरीर पेश की जिन में किसी क़ाबिले एतमाद या मुस्तनद आलिम से इस के ख़िलाफ़ पर हरगिज़ कोई सुबूत न दिया। हम अभी गुज़ारिश कर चुके हैं के अइम्म-ए-दीन व क़ाबिले एतमाद ओलमा के इरशादात के मुक़ाबिल इसकी उसकी बे सुबूत बातें क़ाबिले दलील नहीं हो सकती।

रहा येह के क़ाबा-ए-मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की तस्वीर को उन का ख़ास या तमाम अहक़ाम (हुक्मों) में मसारी समझना के क़ाबे की तस्वीर के तवाफ़ से हज अदा हो जाए और हज के बाद हुज़ूर के रोज़े का तस्वीर के पास हाज़री ज़ियारते मुक़द़सा की हाज़री से बराबर हो जाए येह किसी जाहिल का भी ख़्याल नहीं, ऐसे झूठे वहेम अलबत्ता मुशिरकों व रफ़ाज़ियों को पैदा होते हैं, रिसाला असलमा में के वोह कैसा रिसाला और कहां तक सही सुबूत पेश करने की लियाक़त रखता इस से हट कर देखे तो उस में इसी वहेम पर एतराज़ है वोह इस तरीक़ा-ए-अनीका पर जो अइम्म-ए-किराम व ओलमा-ए-आलाम में मामूल व मक्बूल रहा। अस्लन वारद नहीं।